द्विराशिपतिफलम्

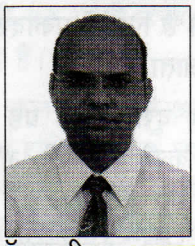

डॉ. सुशील अग्रवाल

विषय प्रवेश

सूर्य एवं चन्द्र के अतिरिक्त सभी ग्रहों को दो–दो राशियों (एक सम और एक विषम) का स्वामित्व प्राप्त है जिनमें से एक उनकी मूल त्रिकोण राशि होती है। दशा फल निर्णय के समय ज्योतिषियों के समकक्ष एक असमंजस की स्थिति उत्पन्न होती है कि ग्रह अपनी दोनों राशियों में से कब कौन सी राशि के फल देगा।

जन्मकुंडली में दो राशियों वाले ग्रह की निम्न स्थिति हो सकती है :

1. स्वराशि में
   - मूल त्रिकोण राशि में
   - अपनी दूसरी राशि में
2. अन्यत्र राशि में
   - विषम (ऊनी) राशि में
   - सम राशि में

ग्रहों के स्वभाववश साधारण और स्थानादिवश विशिष्ट दशाफल होते हैं। इस लेख में स्थानादिवश दशाफल का वर्णन है।

आइये, प्रचलित ज्योतिषीय शास्त्रों के सन्दर्भ और उदाहरणों से इस विषय के फलित का विचार करते हैं।

शब्दावली

पाठकों के त्वरित संदर्भ के लिए: मेष में 12 अंश तक मंगल का मूलत्रिकोण, कन्या में 15 अंश के बाद 5 अंश बुध का मूलत्रिकोण, धनु में 10 अंश तक गुरु का मूलत्रिकोण, तुला में 15 अंश तक शुक्र का मूलत्रिकोण और कुम्भ में 20 अंश तक शनि का मूलत्रिकोण होता है।

साहित्यिक संदर्भ

फलदीपिका के अनुसार :

द्विस्थानाधिपतित्वमस्ति यदि चेन्मुख्यं त्रिकोणर्क्षजं
तस्यार्द्धं स्वगृहेऽथ पूर्वमुभयोर्यत्तदृषादौ वदेत् ।
पश्चद्भावमिहापरार्द्धसमये युग्मे गृहे युग्मजं
त्वोजस्थे सति चौजभावजफलं शंसन्ति केचिज्जनाः।।

दो स्थानों के स्वामी ग्रह, अपनी मूल–त्रिकोण राशि के फल मुख्यतः देते हैं। मुख्यतः शब्द को ज्योतिषियों ने अलग–अलग प्रकार से समझा है। दशा अवधि का सन्दर्भ अधिक प्रचलित है जिसके अनुसार जातक को मूलत्रिकोण राशि के फल अधिक अवधि तक मिलते हैं। उदाहरण के तौर पर, यदि मूलत्रिकोण राशि के 100% फल मिलेंगे तो दूसरी राशि के 50%। दशा अवधि से देखें तो गुरु की 16 साल की दशा में लगभग 12 साल धनु स्थित भाव के और लगभग 4 साल मीन स्थित भाव के फल मिलेंगे।

यह बात तो हुई कि मूलत्रिकोण राशि के फल मुख्यतः मिलेंगे परन्तु क्रम क्या होगा? इस सन्दर्भ में मन्त्रेश्वर ने उपरोक्त श्लोक में ही कहा है कि लग्न से गिनने पर ग्रह की जो राशि पहले आएगी, उसके फल पहले और दूसरी राशि के फल उसके पश्चात मिलेंगे। उपरोक्त श्लोक में ही मन्त्रेश्वर जी यह भी कहते हैं कि अन्य विद्वानों (समकालीन ऋषियों) के मतानुसार दो राशियों का स्वामी ग्रह यदि विषम राशि में स्थित है तो वह अपनी विषम राशि वाले भाव के फल पहले और सम राशि वाले भाव के उसके बाद में देगा। इसी प्रकार वह ग्रह यदि सम राशि में स्थित है तो वह पहले अपनी सम राशि वाले भाव के फल करेगा और उसके पश्चात् विषम राशि वाले भाव के।

उपरोक्त श्लोक में सामान्य नियम वर्णित हैं और निम्न श्लोक में एक विशेष नियम है :

दुःस्थानपस्तदितरस्वगृहस्थितश्चेत् स्वक्षेत्रभावफलमेव करोति नान्यति ।
मन्दो मृगे सुतगृहे यदि पुत्रसिद्धिः षष्ठाधिपतकृतदोषफलं च नात्र।।

यदि भावेश उस राशि में स्वगृही हो, जो लग्न से शुभ स्थान (1, 4, 7, 10, 5, 9) में है तो वह ग्रह शुभ स्थान वाले अपने भाव के फल देता है। अगर उसकी दूसरी राशि अशुभ स्थान (3, 6, 11, 8, 12) में हो तो उसके अशुभ फल नहीं देता। उदाहरण के तौर पर, शनि यदि पंचम में मकर राशि में स्थित हो तो पुत्र प्राप्ति होगी और षष्ठम भावेश होने का दोष नहीं लगेगा, जिससे जातक को मूलत्रिकोण राशि, जो कि

एक अशुभ भाव में है, के अशुभ फल नहीं मिलेंगे। ग्रह यदि लग्न से अशुभ स्थान 'वाली राशि में स्वगृही हो तो क्या होगा? इस श्लोक में यह नहीं बताया गया है इसीलिए यह मान कर चलते हैं कि ऐसी स्थिति में पहले श्लोक में वर्णित सामान्य नियम ही लागू होगा।

उदाहरण

उदाहरण–1 : 12–जुलाई–1965, 07:30 बजे, आगरा।

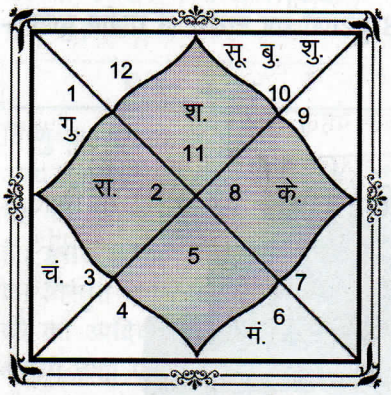

शनि की महादशा नवंबर–1999 से नवंबर–2018 तक है। शनि अपनी मूलत्रिकोण राशि में लग्न से शुभ स्थान में स्थित हैं इसीलिए उपरोक्त विशेष नियम लागू होगा। शनि की महादशा लगते ही आजीविका संबंधित संघर्ष खत्म हो गया और स्वतः नवीन अवसर प्राप्त होते गए जिसके फलस्वरूप जातक ने स्वतंत्र व्यवसाय की शुरुआत की और खूब तरक्की की। लगभग 2015 से द्वादश भाव के फल मिलने लगे परन्तु व्यय शुभ कार्यों में ही बढ़ा, जैसे प्रोपर्टी खरीदना या बच्चों की पढ़ाई।

उदाहरण–2 : शुक्र की महादशा दिसम्बर–2000 से दिसंबर–2020 तक है। दशा के आरम्भ होते ही जातिका ने घर बदला, छोटे बच्चों के

29–अगस्त–1969, 20:00 बजे, दिल्ली।

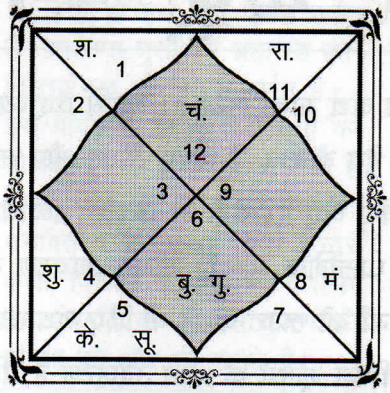

कारण नौकरी छोड़ी, अतिरिक्त पढ़ाई की और छोटी–छोटी अवधि वाली नौकरियां कीं। जातिका के जीवन में लगभग 2005 के अंत तक बहुत संघर्ष रहा जिसका सामना करने के लिए उसे अत्यधिक साहस की आवश्यकता पड़ी। 2006 में जातिका सरकारी स्कूल में अध्यापिका के तौर पर नियुक्त हुई और जीवन में स्थायित्व आया। शुक्र ने सर्वप्रथम वृषभ राशि के 5–6 साल फल दिए और फिर अष्टम के। परन्तु अष्टमेश के शुभ स्थित, भाव से केंद्र में, अशुभ प्रभाव रहित और बली राशीश होने से जातिका को अधिक अशुभ फल नहीं मिले। 2007 में जातिका का एक बड़ा ऑपरेशन हुआ परन्तु इसके अतिरिक्त अशुभ फलों की अनुभूति नहीं हुई।

उदाहरण–3 : गुरु की महादशा अक्तूबर–2012 से अक्तूबर–2028 तक है। गुरु स्वराशिस्थ नहीं हैं और धनु उनकी मूलत्रिकोण राशि है जो लग्न से गिनने पर पहले आती है। जातक को दशा प्रारम्भ से ही फलों में छठे भाव का प्रभाव दिखने लगा। लगभग 2012 से जातक ने बहु–राष्ट्रीय कंपनी में वकील के तौर पर नौकरी आरंभ की, शादी

16–दिसंबर–1974, 19:50 बजे, दिल्ली।

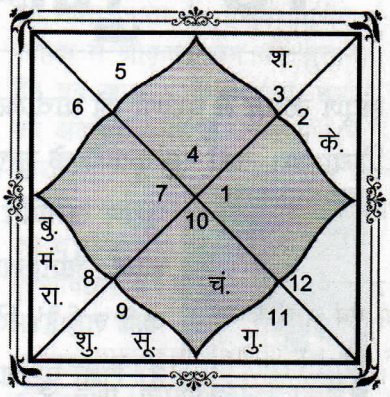

हुई, दो–तीन वर्षों के बाद नौकरी छोड़ दी, भार्या से संबंध भी खराब रहने लगे और धनागमन कम रहा जिसके फलस्वरूप जातक के जीवन में स्थायित्व की कमी है। षष्ठम और अष्टम विदेश की समस्याओं का भी भाव है। जातक ने इस अवधि में कनाडा में स्थायी निवास के लिए बहुत कोशिश की परन्तु सभी प्रयास विफल रहे। नवम भाव के फल 2024 के आसपास ही मिलेंगे।

निष्कर्ष : ग्रह अपनी मूल त्रिकोण राशि के फल अधिक प्रखरता से और लम्बे समय तक देता है। लग्न से ग्रह की जो राशि पहले आती है, उसके फल पहले मिलते हैं। विशेष नियम है कि यदि ग्रह अपनी मूलत्रिकोण राशि में स्थित है और मूलत्रिकोण राशि लग्न से शुभ स्थान में है तो ग्रह अपनी अशुभ राशि के अशुभ फल नहीं करता।

फलित के अन्य सामान्य नियमों और ग्रहों के बल आदि का आकलन करके ही फलकथन किया जाना चाहिए। ❐

पता : बी– 301, सोम अपार्टमेंट,
सेक्टर–6, प्लॉट–24, द्वारका,
नई दिल्ली–75
मो. 9810162371